National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 210-212
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सोनिका देवी
शोधछात्रा, संहिता एवं संस्कृत विभाग,
आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

डॉ. सुदामा सिंह यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, संहिता एवं संस्कृत-विभाग, आयुर्वेद संकाय,
विकित्सा विज्ञान संस्थान,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

Correspondence:
सोनिका देवी
शोधछात्रा, संहिता एवं संस्कृत विभाग,
आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

अष्टांगहृदय में वर्णित छंदों का विवेचनात्मक अध्ययन

सोनिका देवी, डॉ. सुदामा सिंह यादव

प्रस्तावना-

आयुर्वेद को जीवन का विज्ञान कहा जाता है। हजारों वर्ष पूर्व रचित आयुर्वेदिक ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे गये थे। इन ग्रन्थों के अन्तर्गत प्रमुखत: बृहत्त्रयी आते है, जिसमें चरक संहिता, सुश्रुत संहिता एवं अष्टांग हृदय हैं। अष्टांग हृदय आचार्य वाग्भट्ट द्वारा रचित है। आचार्य वाग्भट्ट चिकित्सक होने के साथ-साथ एक प्रौढ कवि भी हैं और उनकी रचना अष्टांगहृदय एक उत्तम काव्य का नमूना है। अष्टांगहृदय की भाषा प्रांजल, पाणिनीय, सुसंस्कृत एवं प्रवाहमय है। यह पद्य शैली में लिखा गया है। जिसमें ६ स्थान- सूत्र स्थान, निदान स्थान, शारीर स्थान, चिकित्सा स्थान, कल्प स्थान, उत्तर स्थान एवं १२० अध्याय और ७४७१ श्लोक हैं।

छन्द –

यास्क के अनुसार- छन्द शब्द की व्युत्पत्ति ' छदि संवरणे ' धातु से हुई है। 'छन्दांसि छादनात्' जिसका अर्थ है-आच्छादित करना । पाणिनीय शिक्षा में छन्द को वेदरूपी पुरुष का पैर कहा गया है – **छन्द: पादौ तु वेदस्य।** जिस सूत्र से मात्रा, वर्ण, रचना, विराम एवं यति संबंधी नियम का ज्ञान होता है उसे छन्द कहते हैं। छन्दों का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त है – छन्दांसि जज्ञिरे (९/९०.१०.ऋ)। छन्द शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य पिंगल माने जाते हैं। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ छन्दसूत्र है,जो ८ अध्यायों में विभक्त है।

मात्रिक (जाति) छन्द - जिनमें मात्राओं की गणना की जाती है, उन्हें मात्रिक छन्द कहते हैं। जैसे - आर्या आदि।

वर्णिक (वृत्त) छन्द - जिनमें अक्षरों की गणना होती है, उन्हें वर्णिक छन्द कहा जाता है। जैसे - स्त्रग्धरा, मन्दाक्रान्ता आदि।

वृत्त छन्द तीन प्रकार का होता है - समवृत्त, अर्द्धसमवृत्त, विषमवृत्त।

सममर्धसमं वृत्तं विषमञ्चेति तत् त्रिधा। (छ. म. १/५)[१]

समवृत्त - समवृत्त में चारों पादों में वर्णों की संख्या बराबर होती है, जैसे- अनुष्टुप (८-८), इन्द्रवज्रा (११-११)आदि ।

अर्द्धसमवृत्त - अर्द्धसमवृत्त में १ -३ और २-४ चरण में समानता होती है, जैसे - पुष्पिताग्रा आदि।

विषमवृत्त - विषमवृत्त में चारों पादों में वर्णों की संख्या विषम होती है, जैसे - उद्गाता, गाथा आदि।

- **मात्रा -**उच्चारण काल विशेष को मात्रा कहते हैं । लघु की एक मात्रा एवं गुरु की दो मात्रा मानी जाती है।
- **यति –** यति का अर्थ 'विराम'। पद्य के उच्चारण में श्वास लेने हेतु क्षणभर रुकने का व्यवस्थित स्थान 'यति' कहलाता है ।
- **गण –** वर्णिक छन्दों में गणना की सुविधा के लिए छन्द शास्त्र में गणों का विधान किया गया है। तीन अक्षरों के समूह को गण कहते हैं। छन्दशास्त्र में कुल ८ गण बताये गए हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादि गुरुःपुनरादि लघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुःकथितोऽन्तलघुस्तः।।

(छ.म.१/८)[२]

१- मगण (ऽऽऽ),२- नगण (।।।),३- भगण (ऽ।।),४- यगण (।ऽऽ) ५- जगण (।ऽ।), ६- रगण (ऽ।ऽ), ७ - सगण (।।ऽ), ८- तगण (ऽऽ।)।

गुरु - लघु नियम –

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गो च गुरुर्भवेत ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ।। (छ.म.१/११)[३]

अनुस्वार से युक्त (अं, कं खम् इत्यादि), दीर्घ (आ, ई, ऊ इत्यादि), विसर्गान्त (अः,कः इत्यादि), संयोग वर्ण के पूर्व (कृष्ण, विष्णु इत्यादि) ऐसे वर्ण गुरु (ऽ) हैं। पदान्त में स्थित लघु वर्ण आवश्यकता होने पर उसे गुरु मान लिया जाता है ।

अष्टांगहृदय - आयुर्वेद के सभी आचार्य छंद, व्याकरण आदि अन्य शास्त्रों के ज्ञाता थे। अष्टांगहृदय पद्य शैली में लिखा गया है।अष्टांगहृदय में आचार्य वाग्भट्ट ने विभिन छंदों अनुष्टुप, आर्या, आर्यागीति, पुष्पिताग्रा, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, पृथ्वी, वंशस्थ, विपुला, स्रग्धरा, स्वागता, हरिणी इत्यादि ४४ छंदों का प्रयोग किया है। लेकिन अनुष्टुप छन्द का प्रयोग अत्याधिक किया है।

अष्टांगहृदय में वर्णित छंदों की सूची –

१ अनुष्टुप	१६ दण्डकोऽर्णाख्यः	३१ रथोद्धता
२ आर्या	१७ दण्डकोव्यालाख्यः	३२ बसन्ततिलका
३ आर्यागीति	१८ दोधकवृत्तम्	३३ वंशस्थ
४ आर्याजघनचपला	१९ द्रुतविलम्बित	३४ विपुला
५ विपुला	२० धीरललिता	३५ वैतालीय
६ इन्द्रवज्रा	२१ नर्कुटक	३६ वैश्वदेवी
७ उद्गीतिरार्या	२२ पुष्पिताग्रा	३७ शार्दूलविक्रीडितम
८ उपचित्रा	२३ पृथ्वी	३८ शालिनी
९ उपजाति	२४ प्रहर्षिणी	३९ शुद्धविराट्
१० उपेन्द्रवज्रा	२५ भद्रा	४० स्रग्धरा
११ औपच्छन्दसिक	२६ मत्तमयूर	४१ स्वागता
१२ कुसुमितलता	२७ मन्दाक्रान्ता	४२ हरिणी
१३ गीति	२८ मात्रासमक	४३ दोधकवृत्तम्
१४ गीतिसमुखचला	२९ मालिनी	४४ आर्याविपुला
१५ तोटक	३० मुखचपला	

प्रस्तुत शोध लेख में मात्रिक छंद - आर्या, वर्णिक छंद - अनुष्टुप, पुष्पिताग्रा, मालिनी, इन्द्रवज्रा, मन्दाक्रान्ता, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडितम उक्त छंदों का अष्टांगहृदय में उदाहारण स्वरूप देखेंगे-

आर्या छन्द

लक्षण- यस्या: पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽर्या।। (श्रु.बो.)[४]

इस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में १२-१२ मात्राएँ तथा द्वितीय चरण में १८ और चतुर्थ चरण में १५ मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण – **जीवन्ती काकोल्यौ मेदे द्वे मुद्गमाषपर्ण्यौ च ।**
ऋषभकजीवकमधुकं चेति गणो जीवनीयाख्यः।।(अ.हृ.सू.१५/८)

अनुष्टुप छन्द

लक्षण - **श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम् ।**
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दिर्घमन्ययो। (श्रु.बो.)[५]

इसके प्रत्येक चरण में आठ - आठ अक्षर होते हैं ,चारों चरणों में कुल मिलाकर ३२ अक्षर होते हैं। इस छन्द के चारों चरणों में पाँचवां अक्षर लघु (ह्रस्व),छठवां अक्षर गुरु (दीर्घ) हो, पहले और तीसरे चरण में सातवाँ अक्षर दीर्घ तथा दूसरे एवं चौथे चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व हो, उसे अनुष्टुप छन्द कहतें हैं ।

निदान स्थान और कल्पसिद्धिस्थान के सभी श्लोक अनुष्टुप छन्द में हैं।

उदाहरण – **फलपुष्पविहीनस्य प्रवालैस्तस्य साधितम् ।**
पित्तश्लेष्मज्वरे क्षीरं पित्तोद्रिक्ते प्रयोजयेत् ।।(अ.हृ.क.१/२८)

इन्द्रवज्रा छन्द

लक्षण – **स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।** (छ.म.२/११)[६]

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ -११ अक्षर और प्रत्येक चरण में दो तगण ,एक जगण, दो गुरु हों वहाँ इन्द्रवज्रा छन्द होता है

उदाहरण –

मण्डूकपर्णीमपि भक्षयन्तो
भृष्टां घृते मासमनन्नभक्षाः।
जीवन्ति कालं विपुलं प्रगल्भा-
स्तारुण्यलावण्यगुणोदयस्थाः।। (अ.हृ.उ.३९/१६४)

मालिनी छन्द

लक्षण –

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। (छ.म.२/४)[७]

मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में १५-१५अक्षर होतें हैं। जिसमें दो नगण, एक मगण, दो यगण से युक्त छन्द मालिनी छन्द कहलाता है। इसमें भोगी (८)और लोक (७) वर्णों पर यति होती है ।

उदाहरण –

मदनमधुकलम्बानिम्बबिम्बीविशाला,
त्रपुसकुटजमूर्वादेवदालीकृमिघ्नम् ।
विदुलदहनचित्राः कोशवत्यौ करञ्जः,
कणलवणवचैला सर्षपाश्छर्दनानि।। (अ.हृ.सू.१५/१)

मन्दाक्रान्ता छन्द

लक्षण- **मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।** (छ.म.)[८]

जब अम्बुधि (४), रस (६), नग (७) अक्षरों पर यति और जिसमें एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण एवं दो गुरु हो वहाँ मन्दाक्रान्ता छन्द होता है ।

उदाहरण –

लाक्षादन्ती मधुरसव राद्वीपिपाठाविडङ्ग
प्रत्यक्पुष्पीत्रिकटुरजनीसप्तपर्णाटरूषम् ।
रक्ता निम्बं सुरतरु कृतं पञ्चमूल्यौ च चूर्णं
पीत्वा मासं जयति हितभुग्गव्यमुत्रेण कुष्ठम् ।।

(अ.हृ.चि.१९/४१)

शार्दूलविक्रीडितम छन्द

लक्षण- **सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।** (छ.म.)[९]

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में सूर्य (१२)और अश्व(७)वर्णों पर यति हो और इसमें क्रमशः मगण, सगण,जगण, सगण, दो तगण और एक गुरु हो तो वहाँ पर शार्दूलविक्रीडित छन्द होता है।

उदाहरण – **पीत्वैवं चषकद्वयं परिजनं सन्मान्य सर्वं ततो**
गत्वाऽऽहार भुवं पुरः सुभिषजो भुञ्जीत भूयोऽत्र च।
मांसापूपघृतार्द्रका दिहरितैर्युक्तं ससौवर्चलै
र्द्विस्त्रिर्वानिशिचाल्पमेव वनितासंवल्गनार्थ पिबेत्।

(अ.हृ.चि.७/८६)

स्त्रग्धरा छन्द

लक्षण- **म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्त्रग्धरा कीर्तितेयम।**

(छ.म.)[१०]

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में त्रिमुनि (७,७,७)वर्णों पर तीन यति तथा कुल २१ वर्ण होते हैं । एवं प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण तथा तीन यगण हो तो वह स्त्रग्धरा छन्द कहलाता है ।

उदाहरण –

श्यामादन्तीद्रवन्तीक्रमुककुटरणाशङ्खिनीचर्मसाह्वा
स्वर्णक्षीरीगवाक्षीशिखरिरजनकच्छिन्नरोहाकरञ्जाः ।
बस्तान्त्री व्याधिघातो बहलबहुरसस्तीक्ष्णवृक्षात्फलानि
श्यामाद्यो हन्ति गुल्मं विषमरुचिकफौ हृद्रुजं मूत्रकृच्छ्रम्॥

(अ.हृ.सू.१५/४५)

पुष्पिताग्रा छन्द

लक्षण - **अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि-**
च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा । (छ.म.३/५)[११]

पुष्पिताग्रा छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में १२-१२ वर्ण होतें हैं, जिसमें दो नगण, एक रगण और एक यगण होता है। द्वितीय और चतुर्थ चरण में १३-१३ वर्ण होतें हैं। जिसमें एक नगण, दो जगण, एक रगण और एक गुरु होता है। दो - दो चरणों में समान वर्ण होने के कारण इस छन्द को अर्द्धसम वृत्त नाम दिया गया है।

उदाहरण – **मदनकुटजकुष्ठदेवदाली,मधुकवचादशमूलदारुरास्नाः।**
यवमिशिकृतवेधनं कुलत्था, मधु लवणं त्रिवृता निरूहणानि।।

(अ.हृ.सू.१५/३)

निष्कर्ष – निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि छन्द के बिना पद्य काव्य का निर्माण ही सम्भव नहीं है। आचार्य विश्वनाथ ने कहा भी है- **छन्दों बद्ध पद्यम्** अर्थात् छन्दोबद्ध रचना ही पद्य काव्य कही जाती है। पद्य का आधार छन्द हैं । इसलिए पद्य निर्माण में छन्द का ज्ञान होना परम आवश्यक है। आयुर्वेद एक चिकित्सा विज्ञान है ,परन्तु सभी संहितायें संस्कृत में ही लिखी गई हैं। अतः इसके अर्थ और प्रयोग को समझने के लिए व्याकरण, छन्द आदि का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। आयुर्वेद संहिता के ज्ञान को सम्यक् रुप से समझने व सुगमता से कंठस्थ करने के लिए छन्दों का ज्ञान एवं उपयोग आवश्यक है। अष्टाङ्गहृदय के टीकाकार अरुणदत्त ने लगभग ४४ छन्दों को बताया है।जिनमें अनुष्टुप,आर्या, आर्याविपुला, गीति, इन्द्रवज्रा, शालिनी, उपजाति इत्यादि हैं। इनमें अनुष्टुप छन्द का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। निदान स्थान और कल्पसिद्धिस्थान के सभी श्लोक अनुष्टुप छन्द में हैं। चिकित्सास्थान में सबसे अधिक ३२ छन्दों का प्रयोग किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

१ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-४ ।
२ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-५।
३ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-७ ।
४ कुमारी सुषमा पाण्डेय, श्रुतबोध, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज नं-५।
५ कुमारी सुषमा पाण्डेय, श्रुतबोध, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज नं-११।
६ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-३३।
७ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-७२।
८ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-८७।
९ डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-१००।
१०डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी,छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज नं-१०८।
११डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी,छन्दोमञ्जरी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,पेज नं-१२९।
१२सुवृत्ततिलक, डॉ.ब्रजमोहन,चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी।
१३डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, अष्टांगहृदयम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्टान, दिल्ली।
१४वैद्य हरिशास्त्री पराड़कर, अष्टांगहृदयम्, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
१५आचार्य प्रियव्रत शर्मा, वाग्भट्ट विवेचन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।